

प्रकाशक --

गोकुलदास धृत,

नवयुग साहित्य सदन

गङ्गरी बाजार, इन्दौर सिटी.

—ॐ:—

संस्करण

अगस्त १९३६ . ५०००

जनवरी १९४० . ३०००

मार्च १९४५ : ५०००

नवम्बर १९४६ १००००

मूल्य चार आना

—ॐ:—

मुद्रक—

सी० एम० शाह

माडर्न प्रिन्टरी लिमिटेड, इन्दौर ।

भारत-भाग्य-विधाता

जनगण-मन- अधिनायक जय हे,

भारत-भाग्य विधाता !

पंजाब, सिन्धु, गुजरात, मराठा,

द्राविड, उत्कल, बंगा,

विन्ध्य.हिमाचल. यमुना, गङ्गा,

उच्छल जलधि-तरगा,

तव शुभ नामे जागे,

तव शुभ आशिष मागे.

गाहे तव जय-नाथा,

जनगण भगलदायक जय हे,

भारत-भाग्य-विधाता !

जय हे ! जय हे ! जय हे !

जय जय जय जय हे !

अहरह तव आद्वान प्रचारित,

मुनि तव उदार वाणी.

हिन्दु. बौद्ध. सिख, जैन, पारसिक.

मुसलमान. ख्रिस्तानी.

पूत्र पश्चिम ज्ञाने,
तत्र विहगनन पाने.

जनगण प्रथम विधायक जय है,
प्रेमहार हय गीना !

भारत भाग्य-विधाता !
जय है ! जय है ! जय है !

जय जय जय जय है !

पतन अभ्युदय वधु प रा युग-युग धावित चार्त्री,
तुमि चिरनागभितर र-रचक्रं मुग्गन्ति पथ दिन-नार्त्री,
दारुण वित्तव माने,
तव शान्धनि वाजे.

जनगण-पथ परिचायक जय है,
नक्षत्र-दुग्गनाता !

भारत-भाग्य विधाता !
जय है ! जय है ! जय है !

जय जय जय जय है !

घोर तिभिग्गननिदिडनिर्शीभि पीडितनृच्छित्तदेशं.
जाशुत क्लिलतव त्वविचल भगल नतनयने जनिमेशे

दुःस्वप्ने आतके,
 रक्षा करिले अके,
 स्नेहमयीं तुमि माता !
 जनगण दुःसप्रायक जय हे,
 भारत-भाग्य-विधाता !
 जय हे ! जय हे ! जय हे !
 जय जय जय जय हे !
 रात्रिप्रभातिल उदिल रविच्छवि पूर्व उदयगिरि भाले
 गाहे विहगम पुण्यसमीरण नवजीवन रस ढाले !
 तव करुणारुण रागे,
 निद्रित भारत जागे !
 तव चरणे नतमाथा !
 जय जय जय हे जय राजेश्वर,
 भारत भाग्य-विधाता !
 जय हे ! जय हे ! जय हे !
 जय जय जय जय हे !
 —स्वीन्द्रनाथ ठाकुर

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं, हमारी,
 सदियों रहा है दुश्मन दौरे जमों^१ हमारा !
 'इकबाल' कोई मरहम^२ अपना नहीं जहाँ में,
 मालूम क्या किसी को दर्देनिहाँ^३ हमारा !

—मुहम्मद इकबाल

मेरा वतन

चिश्ती ने जिस जमीं में पैगामेहक^४ सुनाया,
 नानक ने जिस चमन में वहदत^५ का गीत गाया,
 तातारियों ने जिसको अपना वतन बनाया,
 जिसने हिजाजियों^६ से दश्ते^७ अरब छुड़ाया,
 मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है !

सारे जहाँ को जिसने इल्मों हुनर दिया था,
 बूनानियों को जिसने हैरान कर दिया था,

१ काल चक्र २ भेद जाननेवाला ३ भीतर की व्यथा

४ द्शर का संदेश ५ अद्वैतप्राप्त ६ अरब निवासी

७ जगल

मिथी को जिमनी हफले जुर^१ का अमर दिया था.
 तुको का जिमने दामन हीरो में भर दिया था.

मेरा बतन यही है. मेरा बतन यही है !

टटे में जो सितारें. फागन के आनमो में.
 फिर नाच टके जिमने चमगाये कह रूरी^२ में.
 यहदत की लक्ष्मी^३ दुनियां जिन भकों में.
 मारे अरव^४ को आडे टोही हया जहाँ में.

मेरा बतन यही है. मेरा बतन यही है !

घण्टे किल्लिम^५ जिमके. परदन जहो के नीना^६.
 नृहे नदी का टहरा आकर जहाँ नफीना^७.
 गफलत^८ है नि न जमी की दामे फलक का जीना.
 जामन की जिउना है जिमनी फिजा में जीना.

मेरा बतन यही है. मेरा बतन यही है !

१ मोजा २ आर ग रणा ३ नदी ४ हजमत
 ५ हलमन मृगा ६ नृ पद जिमर मृगा दो
 ईशरीय शोषि के दर्शन होना माना जाता है
 ७ नार

गौतम का जो वतन है, जापान का हरम है,
 ईसा के आशिकों को मिस्ले येरूशलम है,
 मदफून^२ जिस जमी में इस्लाम का हशम^३ है,
 हर फूल जिस चमन का फिरदौस^४ है, डरम है,
 मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है !

—मुहम्मद इक़बाल

हमारा देश

अरुण यह मधुमय देश हमारा !
 जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को,
 मिलता कूल किनारा ।
 गरम तामरम गर्भ-विभा पर,
 नाच रही तरु-शिग्या मनोहर,
 छिटका जीवन-हरियाली पर,

१ उंचाई २ गढ़ा हुआ ३ गोंग ४ स्वर्ग

मगल कुसुम नारा ।
 अरुण यह मधुमय देश हमारा ।
 हम कुम्भ तें उपा नदरें,
 भरती दुलरानी नुन नरें ।
 भादर उग्रते रहते रजनी भर,

जय जग कर नारा ।
 अरुण यह मधुमय देश हमारा ।
 लघु नुरधनु-ने पन पनारें,
 नुरभि पन्न अनुकूल नहारें ।
 उलते नग जिन नोर मह किये,

नमस्क नीट निज पारा ।
 अरुण यह मधुमय देश हमारा ।
 दरमार्ती नरानो के वादरें,
 बनते जही भरे करण जग ।
 गहरे दरमार्ती पनना की,

पारर जही महारा ।
 अरुण यह मधुमय देश हमारा ।

— अरुण नर प्रम ३

अर्चना के रत्नकण में
एक कण मेरा मिलालो ।

जब हृदय का तार बोले
श्रृङ्खला के वन्द रोले
हों जहाँ बलि शीश अगणित
एक मिर मेरा मिलालो ।

— सोहननाल द्विवेदी

कौमी गीत

दावा है हर, आन हमारा
सारा हिन्दुस्तान हमारा
जगल और गुल्जार हमारे,
दरिया और कुहसार हमारे ।
बूचे और बाजार हमारे,
फल हमारे, मार हमारे ।
हर घर हर मैदान हमारा,
सारा हिन्दुस्तान हमारा ।

[१२]

गों नहीं हममें फौजी करत,
 फिर भी बहुत है दिल में हिम्मत ।
 और हमारे साथ है कुदरत,
 अब कोई तारत कोई हुम्मत ।
 गोक तो है तुफान हमारा,
 नाग हिन्दुस्तान हमारा ।

हममें भारत की रीतक है,
 आजादी दिन रात सबक है ।
 अपनी धनक है अपनी शक्तक है
 हर जगह पर अपना हक है ।
 गैत अपने दरवाने हमारा,
 नाग हिन्दुस्तान हमारा ।

मन्दिर, मस्जिद जो सबतना
 दाग^१ 'भारत'^२ जो पैमाना ।
 जंगल वरती जो दराना,
 हर महाशिव जो हर कामाना^३ ।

१ भाग्य की लाली २ देवता ३ मनुजाना ४ सुरा
 ५ भारत का पतला ६ घर

हर दर हर एवान^१ हमारा ,
सारा हिन्दुस्तान हमारा ।

गो है पामाल^२ अपनी हस्ती,
हर सू है पस्ती^३ ही पस्ती ।
तन आसानी^४ ऐशपरस्ती,
दिन भर फाका शव^५ भर मस्ती ।
है यह मगर ईमान^६ हमारा ।
सारा हिन्दुस्तान हमारा ।

हिन्द का मालिक हर हिन्दी हो,
सिर्फ यहाँ एक कौम बगी हो ।
चार^७ न पाये स्वाह कोई हो,
चाहे वह खुद अपनी सुदी हो ।
देख जग अरमान हमारा,
सारा हिन्दुस्तान हमारा ।

—‘सागर’ निजामी

^१ गजमदल ^२ मिट्टी हुई ^३ नीचाई, बर्बादी
^४ सहिष्णुता ^५ रात ^६ विश्वास ^७ देखल

सातृ-वन्दना

सन्मन ! जननी तुम, प्रणाम !

तुम्हें वन्दन प्राणों की प्राण !

भाग्य है तेरा गिहासन

उंचा मुकुट हिमालय

पलकें परितमालाये हैं,

गंगा माला मणिमय

भीनी हवा जाम है तेरी,

ह प्रसिद्धि-नीर नदियाँ,

मिर्ची चाखनी मधुर हनी है

सोम-सोम तरु कान्छियाँ

मेव हरे परिपक्व, गणपति है उत्तर तेरा दिवान

सन्मन ! जननी ! तुम प्रणाम !

तुम्हें वन्दन प्राणों की प्राण !

1 जननी है, सन्मन !

7 ह नदी नदी नदी.

हम इतने करोड प्राणों की
 तू माँ शक्ति-निधाना,
 जीवनधात्री विजयप्रदात्री
 सुखदा, वरदा, भरणी !
 कर्ता-भर्ता-सहर्ता की
 एकाकृति तू धरणी !!
 तेरी अतुल शक्ति के साधन
 अनगिन तन-मन-प्राण
 जन्मभू ! जननी ! तुझे प्रणाम !
 तुझे वदन प्राणों की प्राण !

तेरे प्राणों से अनुप्राणित,
 तेरे ही जीवन से जीवित,
 तेरे पायक से ज्योतिर्मय
 भू-नभ से लालित-पालित
 इतने कोटि प्राण-कलशों में
 भरकर स्नेह-प्रसेक
 अपने हृदयासन पर करते
 हम तेरा अभिषेक

चरण-नेणु तैरी हम सवका
घेम, कुनाल कन्भारा
जन्म ! जननी ! तुम्हे प्रणाम !
तुम्हे वन्दन प्राणों की प्राण !

प्राणों के लोट का टीका
देकर तेरे भाल
बलि हो जाय इन्ही चरणों में
तेरे अगणित लाल
एक गोंद में पले हुआ का
अजर अमर है नाता
हम सब कोटि-कोटि मिल-बुलन्द
कहत— भारत माता !

तेरे चरणों में तेरे हित
हम दोगे दक्षिण
जन्म ! जननी ! तुम्हे प्रणाम
तुम्हे वन्दन प्राणों की प्राण !
—रुपीन्द्र

भारत माता

माता-सी प्रिय भारत माता !
तुल सकता इसकी तुलना में,
कैसे और किसी का नाता ?
जन्म दिया निज तनु-तत्वों से,
पालन किया सकल सत्वों से,
लिया हमें आजन्म अक में,
विशद वेद वाणी की दाता !
माता-सी प्रिय भारत माता !

अग्रज अनुज अतुल उपजाये,
सती सुता, सज्जन सुत पाये,
दिविजयी विज्ञान-विशारद,
विश्रुत ब्रह्मज्ञान के ज्ञाता !
माता सी प्रिय भारत माता !

क्या समता इसकी ममता की !
अमित क्या इसकी क्षमता की !
भक्त्य भावना-भरित विभूषित

दिभय विभृति अभय भय प्राता !
माता नी प्रिय भारत माता !

पचित हैं इसके प्रसाद से,
तज सर्वा सेना प्रसाद से.
कह अस्वहाय हाय ! जननी को,
जन जन कौन नहीं दुग्य पाता !
माता-नी प्रिय भारत माता !

—'एक राष्ट्रीय आत्मा

— — —

वह देश कौन-सा है ?

भनगोहिनी प्रकृति की जो गोद में घना है ।
सुगन्ध का जहाँ है, वह देश कौन-सा है ?
जिनका पक्ष निरन्तर रलेश धो रहा है ।
जिनका मुकुट हिमाचल, वह देश कौन-सा है ?
नदियाँ जहाँ गुफा की धारा धरा रही हैं ।
सोना हुआ सलोना, वह देश कौन-सा है ?

जिसके बड़े रसीले फल, कन्द, नाज, मेवे ।
सब अग में सजे हैं, वह देश कौन सा है ?
जिसमें सुगन्धवाले सुन्दर प्रसून प्यारे ।
दिन-रात हँस रहे हैं, वह देश कौन-सा है ?
मैदान, गिरि, वनों में हरियालियाँ लहकती ।
आनन्दमय जहाँ है, वह देश कौन-सा है ?
जिसकी अनन्त धन से धरती भरी पड़ी है ।
संसार का शिरोमणि, वह देश कौन सा है ?
सबसे प्रथम जगत में जो सभ्य था यशस्वी
जगदीश का दुलारा, वह देश कौन-सा है ?
पृथ्वी-निवासियों को जिसने प्रथम जगाया-
शिक्षित किया, सुधारा, वह देश कौन सा है ?
जिसमें हुए अलौकिक तत्वज्ञ ब्रह्मज्ञानी ।
गौतम, कपिल, पतञ्जलि वह देश कौन सा है ?
छोडा स्वराज तृणवत् आदेश से पिता के ।
वह राम ये जहाँ पर, वह देश कौन-सा है ?
निस्वार्थ शुद्ध प्रेमी भाई भले जहाँ थे ।
लक्ष्मण भरत सरीगे, वह देश कौन सा है ?
देवी पतिव्रता श्री सीता जहाँ हुई थी ।

माता पिता जगत का, यह देश कौन-सा है ?
 व्यासों का जहाँ पर ये बाल ब्रह्मचारी ।
 एतमान, नाथ, शरर, यह देश कौन-सा है ?
 विद्वान्, श्री योगी, गुरु, राजनीतिकों के ।
 श्रीरूपों में जहाँपर, यह देश कौन-सा है ?
 विष्णु के चला जहाँके देजोट गुरुमा ये ।
 गुरु, प्रोण, नीम, अर्जुन यह देश कौन-सा है ?
 जिसमें अधीनि, धानी हरिचन्द्र, कर्ण-ने ये ।
 नव लोक का हितैषी, यह देश कौन-सा है ?
 पातमीय, ज्ञान एसे जिसमें महान् काये ये ।
 भी शालिदान-वादा यह, देश कौन-सा है ?
 निष्पक्ष-शायरी जन जो, यह विद्वान् है ।
 ये नव दश लोके, यह देश कौन-सा है ?
 ह कोटि-गोट नाई नदय नदय इत्यम्के ।
 भारत विनाय हुआ यह देश कौन-सा है ?

-सतगुरु विगठा

दान दे !

जननि ! दान दे !
आत्ममान दे !
तेरी नित रहे तान, वही गान दे !
जननि ! दान दे !

तन में बल, मन निश्चल
सुगुण सकल, यत्न सफल
अटल सुदृढ निश्चय दे, पुण्य प्राण दे !

जननि ! दान दे !
स्वाभिमान हम न तर्जें
तदपि निरभिमान रहें
त्याग, तप, सहिष्णुता, बलिदान, ज्ञान दे !
जननि ! दान दे !

भाव दीजिए गभीर
चनें सफल धीर-वीर
तेरी अनुरक्ति-भक्ति, विमल ध्यान !
जननि ! दान दे !

तेरे पद शीश धरे
अर्पण सर्वत्र करे

तेरे हित जिये-भरे, विजय दान दे !
जननि ! दान दे !

—जयनारायण व्यास

जय, जय. जय हे भारत जननी !

जय, जय, जय हे भानु-जननी !

धारी मात हमारी !

हिन्दू, सिखी, मुसलमान,

सब नन्दान तुम्हारी !

जिन नृत्यानी मे जखनी हो !

तुम्हारे मे तुम खली हो !

दो तामत ताजत करे गौ, तोर देखो नारी !

जाननी की पुण्य सजारी

मे निरालाकर नारी-नारी

सत्य अहिमा के शस्त्रों से काटें व्यथा तुम्हारी
 आजादी की किरणों से खिल
 हम मंत्र कलियाँ डालें हिल-हिल
 गले हार फूलों का, जिनकी सुश्रु न्यायी-न्यार
 जय, जय जय हे भारत-जननी !

प्यारी मात हमारी !

—श्रीमन्नारायण अग्रवाल

प्यारा भारत देश हमारा !

भारत प्यारा देश हमारा !
 मैं वसुधा के हृदय-गगन का हूँ उज्वल ध्रुवतारा
 ज्ञान-उदधि, श्रुति-स्मृति के पडित,
 गौरव गुरु हिमगिरि-शिर-मण्डित,
 कूट प्रदेश सुशोभित करती पुण्य जान्हवी-धारा
 प्यारा भारत देश हमारा !

हिन्द-अश्व पग धोते प्रति क्षण;
 नवर दुजाता मलय समीरण;

श्यामल मृदु चिसरा गग विधि निज ता अदाग !
ध्याग भारत देश तभाग !

रग-विजया. जग-विदित. दिवा नमः
अर्चुन. राम. प्रताप श्याम-नमः!

धीरो ने शक्ति पर विनके तन मन धन नय प्राग !
ध्याग भारत देश तभाग ।

अष्टावक्रा सोनारिका 'छत्रा



जागरण गीत

तू जाग, आज मेरे स्वदेश !

साहस, गौरव, सयम समेत,
इतिहास पुरातन के प्रमाण !
भारत-विभूति ! निर्मलविवेक !
निर्वाण ज्ञान, गीता विधान !
कर्तव्य-बोध से श्रोत-श्रोत,
हे पांचजन्य के आदि श्रोत !
तू जाग, आज मेरे स्वदेश !

दासत्व-शृङ्खला हीन भीम,
ले यौवन में पौरुष अथाह !
जीवनमय, जाग्रतिमय, प्रबुद्ध,
उठ सागर-सम बलशितप्रवाह !
दुर्जय, अमोघ, नव वीर्यश्लोक,

हे मेरे जीवन-जन वरदोक !
 तू जाग, आज मेरे स्वदेश !
 भव भूले यदि तौ पीतराग,
 तें अरुण तुभक्तो जान-मूल !
 तूभमे विर्लान नन्दानि चर्नीत,
 हे वसुधा के कल्याण-मूल !
 तें अमित तपोधन, प्रलय-तोष,
 हे । ईशाग्रान्मिद-प्रदोष,
 तू जाग, आज मेरे स्वदेश !

—दुर्गा मित्र

जागो, हुआ विद्वान !

राज्यध्वस हो गया, लुट गयीं,
वैभव—माणिक—मणियाँ !

देसो, घर की श्री-सम्पति का
कौन बना अधिराज ?

जागो, जागो, ऐ नरेश,
लुट गया तुम्हारा 'ताज' !

मेरे हिन्दुस्तान !
जागो, हुआ विहान !

काशी लुटी, अयोध्या लुट गई,
मथुरा लुटी विशाख;

उठा ले गये परदेशी
भर-भर सुवर्ण के थाल !

इन्द्रप्रस्थ के सिंहासन पर,
देखो बैठा कौन ?

जागो, जागो, ऐ स्वदेश,
हे व्यथा भगती मौन

मेरे हिन्दुस्तान !
जागो, हुआ विहान !

यह दग्ध का वेश, वन गये

हो भिक्षुक—रुग्ण

छिपा गे हों फटे जीर्ण—

दग्धों से वन—रुग्ण !

'दो दो दाने' को देते हों

कम्पित हाथ पगार

दग्ध कपोलों पर बहती

रहती रान की धार !

भरे हिन्दुस्तान !

जागो, मुझा विहान !

नदी-भर मेला का शानन !

वम दग्धों का शार्पान !!

इससे आशा रोज़ कहारी

बसा होगी लौहिन !

जागो, जागो, भेद-भेद

मेरे हिन्दुस्तान !
जागो, हुआ विहान !

भीम और अर्जुन के पुत्रों !

वने हुए हो दास !

ऐसे पराधीन जीवन से

मधुर मृत्यु का पाश !

कुरुक्षेत्र में गूँज रहा है

भैरव

शख—निनाद !

जागो, जागो, आज

पाण्डवों के रण के उन्माद !

मेरे हिन्दुस्तान !

जागो, हुआ विहान !

जीना है, तो जियो आज

होकर स्वतन्त्र हे वीर !

नहीं म.। जाओ नीचे

पृथ्वी की झाँती चीर !

जागो जागो, आज

महाभारत के भीषण गान !

जागो, जानो, भ कर्मिण

करनेवाले

प्रज्ञान !

मेंने हिन्दुस्तान !

जागो, हुआ दिहाण !

—मोहनदास करमचंद

उगता राष्ट्र

अक्षय सजवन प्रद मद से,
 कर अन्तरतर भरपूर, शूर !
 तुम एक चरणा में भय, चिन्ता,
 सन्देह, शोक कर चूर चूर;
 प्राणों की विलव-लहर,
 विश्व में पहुँचा देते दूर-दूर !
 तुम नवयुग के ऋषि सूत्रधार !
 मेरे किशोर ! मेरे कुमार !
 उन्मत्त प्रलय की तन्मयता,
 तुम तारुण्य के उल्लास-हास,
 युग परिवर्तन की आकांक्षा,
 उच्चैर्द्गल सुर्य की तीव्र प्यास
 तुम वन्य-कुमुद, तुम नग्न प्रकृति,
 की पावनता की मुग्ध वास
 तुम आडम्बर पर पद-प्रहार !
 मेरे किशोर ! मेरे कुमार !
 तुम यौवन-फल के पुष्प और
 शशप कलिका के हो विकास

तुम दो विरुपों के नन्विस्स्यल

पर आशा के उज्वल प्रकाश,

तुम जीर्ण जगत के नवनेतन.

वसुधा के उर के अमर इनाल,

तुम उजटे उपवन की बहार ।

मेरे किशोर । मेरे कुमार !

तुम वह प्राणद न-देश.

विषय जाते जिनमें दुःख वैश्व-हंश.

वह मरती, जिनपर अमुर नृग.

सुर सुधा. गरल चारे महंशः

तुम गदि ही प्रयत्न किरण के.

निशि के उर में वह निर्गम्य प्रवेश.

जिनमें अथ जात अन्धकार.

मेरे अज्ञान ! मेरे अन्धकार !

जो नव-वर्षों की चौर चलें.

तुम उन निर्भीक के सर प्रकाश.

जो सुर-चटक को धार करें.

उन गरीब का चटकटी गह.

जो तडपे भोग-विलासों में,

उस त्यागी उर की उष्ण आह,
तुम सकट-साहस पर निसार ।
मेरे किशोर ! मेरे कुमार !

तुम नूतन की जय, जिसको सुन

कँप उठता जीर्ण जगत थरथर,
वह वायुवेग द्रुत होती गति,
जिससे मानवता की मथर !

वह जाग्रति-किरण अलस पलकों पर

तप्त शलाका-सी लगकर !
जो गुलवाती कर्तव्य द्वार !
मेरे किशोर ! मेरे कुमार !

माँ के अचल की ममता या

याँवन के सुग का लोभ नहीं,
जर्जरित जरा का पन्द्रतावा,
चाँते जीवन का क्षोभ नहीं,
तुम वर्तमान के कठिन कर्म,
लू मरुता तुमको मोह नहीं,

कह नकलता बन्दी तुम्हें प्यार ?
मेरे कियोर ! मेरे कुमार !

तुम नहीं उगाये जा सकते.

राष्ट्रों से, अत्याचारों से.

तुम नहीं मुजाये जा सकते.

सिगा पी बृहद् अकारों से:

तुम नहीं मुजाये जा सकते.

पपकी से, प्यार दुन्दारों से:

तुम मुझसे पीठिन की पुरार !

मेरे कियोर ! मेरे कुमार !

कल रहे सींच आसा शोरिण से.

असम शब्द अस्मिता माने.

कि मैं दुर्गम प... ..

जिनें अस्मिता है कलने;

तुम नहीं मुजाये जा सकते.

कल से पीठिन की माने !

इस तरह पर... ..

मेरे कियोर ! मेरे कुमार !

मेरे प्रह्लाद ! दमन-ज्वाला,
 मैं मन्दस्मित विखराते हो !
 मेरे ध्रुव ! बाधा चीर इष्ट
 पथ पर बढ़ते ही जाते हो,
 मेरे शुक ! प्रबल प्रलोभन में,
 तुम अविचल धैर्य दिखाते हो !
 तुम तप्त स्वर्ण, तुम निर्विकार !
 मेरे किशोर ! मेरे कुमार !

जिसके सम्मुख आ छिन्न-भिन्न
 होंगे ये युग-युग के बधन,
 वह जाँय अमित साम्राज्य प्रबल,
 वह जाय समुन्नत स्वर्ण-भवन,
 गौरव-सिंहासन, गर्व-मुकुट,
 भूलुठित हों बनकर रजकण,
 वह सघशक्ति तुम दुर्निवार !
 मेरे किशोर ! मेरे कुमार !

—जगन्नाथप्रसाद 'मिलिन्द'

भारत

उठ, उठ अंगी नरे तन्वीय ।

अग्निनन्दीय मानव महान ।

जागो, अशोक ! यह स्वर्ण-मकुट

पश्चिम दिशागत मे रत्ना स्वस्त ।

जागो, विजय ! यह विहासन,

यह उष तमहाग तुम्हा ।

जागो, मोहन ! को पांचतन्त्र,

अथ धर्म ही गया पापवन्त ।

जागो, पुष्पोजन ! हे मानव

दानव मे शक्ति, भीत, प्रवन्त ।

जागो, नात्म ! धरणा पर फिर

जग रता मनुज है उत्तरनाग !

पाटलीपुत्र में जगे आज
 युग-युग से सोया चन्द्रगुप्त,
 जिसके आगे हो अलक्षेन्द्र
 की विश्वविजय की चाह लुप्त !

चल पडे महोबे से ऐसी
 दिशि दिशि में वह हलचल अपार ।
 रज के कण-कण से जाग उठे
 अगणित आल्हा-ऊदल कुमार ।

सिन्धुओं में आज दहाड उठे
 गोविन्दसिंह का शौर्य जाग !
 रे, आज पचनद में फिर से
 पुरु के पौरुष की उठे आग !

उठ, उठ, मेरे भारत महान ।
 मेरे ज्योतिर्मय ! जाग जाग !

फिर जाग उठे बुन्देलों में
 वह वीर-चाकुरा छत्रसाल
 इतिहास-पटल पर स्वर्ण-वर्ण
 अन्ति है जिम्मा यश विशाल

कर उट भरालो मे गर्जन
रह शिवा केमर्ग, पुरुषराज
जाना जिनने जग मे अपने
प्राणो मे भी बटकर 'नरराज'

ले विना अर्थात्किरु चमक उट
मरु कणिकाओ की बुझी प्राण
पथर परर मे फूट पटे
क्षत्रिय का आत्मोत्सर्ग-रयाग ।
उट, उट, मेरे भारत महान !
मेरे अमररु जग, जग !

जुमे उट गरुड गन राज
हल्दी—धाटी रा लिले उष
पतंगी आहना रा 'जोहर'
आवा प्रताप का ले प्रताप

सोयीं आशाएँ उठें जाग
रोमों में तन के जगे आग
युग-युग से कीलित जिह्वा में
जग उठे अचानक प्रलय-राग
उठ, उठ, मेरे भारत महान
मेरे प्रलयङ्कर ! जाग, जाग !

तुम लो करवट, हिल उठे धरा,
डोले अम्वर का रत्न-जाल
अँगड़ाई लेने लगे विश्व
लहरें सागर के अन्तराल

हो आज हिमालय अनलालय
हिमविन्दु वनें ये अग्नि-खण्ड
धर लो मानवता का विशाल
उसके कन्धों पर केतु-दण्ड

क्षरणभगुर नश्वर जीवन में
अजरामर-अक्षर उठे जाग

जीव की प्रति प्रति ने जाने
 मत सिद्ध-मृत्यु को महानाग !
 उठ, उठ, मेरे भारत महान !
 नरें मृतमय ! जाग, जाग !

—सुधीन्द्र

हे नूतन वर्ष-विहात जाग !

हे गौतम के अग्निमान, जाग !

हे गरुड के शान, जाग !

हे गार्ग्य के अग्निधान, जाग !

हे दण्ड-शैल्य-पित्तान जाग !

हे जीव के अग्निमान, जाग !

अग्निमान के अग्निमान, जाग !

हे भारत के अग्निमान, जाग !

हे सुवर्ण उग की शान, जाग !

हे अग्निमान के शान, जाग !

हे अग्निमान के अग्निमान, जाग !

हे वैश्यों के धन-दान, जाग !

हे शूद्र-हृदय के ध्यान, जाग !

भारत-माता के नौनिहाल !

आशामय प्राणद उपाकाल,

है काट रहा तममय विशाल

अँगड़ाई का आलस्य-जाल !

हिन्दू ! तू तप की विमल वास,

ईसाई ईसा का प्रकाश,

पैगम्बर के भ्रातृत्व-बीज—

का मुस्लिम में जो है विकास,

सिक्कों ! उन त्यागभरी स्मृतियों

का तुममें है जो अट्टहास,

आओ सब लेकर चलें, करें

उस राष्ट्र-यज्ञ का सुप्रकाश,

जिसमें जीवन का अन्धकार,

मिट जावे यह दासत्व भार !

स्वागत करते हैं हे आगत !

त नूतन वर्ष-विहान जाग !

हे युवक ! यही तो है निदान,
जगने दो अब आजा महान् !
जलने दो मे चर्जर कटियां,
होने दो अब तो शब्दनाद !

सुर्षो जो जीने दो, आगे—
पापी प्राणो का रस-वाद !
हे मरणार्थ की आंग जान !
मरणे शून्य की राग, जान !

हे वानप्रस्थ भगता निहाल,
हे मन्दारसी की नाग जान !
रुद्रगत कलें हूँ हे शगल !
तु मरण पर्य-विहाण जान

जोहर की ज्योतिशरी नाग !
मसार नाग की शप-भोग—
दो सुप्ते हस्तो जी-कमरो

शृङ्गारमयी स्मृतियाँ छोड़ो,
दो जीवन का सच्चा प्रसाद ।

पलियाँ आज पति कों भूलें,
वह ज्योति जगा दें एक आज ।
जिसमें विलास का अन्धकार,
जल जावे लेकर सूद व्याज ।

यह जीने मरने का सवाल,
बलि का भूसा है आज काल
हम अमरात्मा के अमर जीव,
रख दें अपना सब कुछ निकाल ।

ओ भारत के वच्चों ! जागो !
हे प्राणों के अभिमान, जाग ।
स्वागत करते हैं हे आगत !
तृ नूतन वर्ष विहान जाग !

—रामनाथ 'सुमन'

पैदाकर

रत्न की गमगुमारी से,
फोंटे नामान पैदा कर ।
जिगर में जोश, दिल में दर्द,
तन में ज्ञान पैदा कर ।
उठा ले जाये दम भर में,
जहाँ की ये गुमागाने ।
बनाकर ऐसा भरशर .
या फोंटे तृप्तान पैदा कर ।
हम अपनी शान की गानि
गुर्गी में जान पर गेवें ।
कि, हाँ हम ज्ञान पर करवान,
वह हीमान पैदा कर ।
कदम दोनों धी चलें,
रर ले चल गयेगा जानादी ।
कि, भर निटने ही रगतिरा,
ने दिने नामान ! पैदा कर ।

१ दुःखरूप २ अनेक दिने ३ चरण चूमना

सुदी^१ को नेस्त कर आर्यें,
 वजायें जङ्ग का डङ्गा ।
 कुछ ऐसे मनचले, दिलदार,
 मर्द इन्सान पैदा कर ।
 न मर्गों-जीस्त^२ को देखूँ,
 न देखूँ रजो-राहत^३ को ।
 कि दिल में एक बेचैनी,
 मेरे भगवान पैदा कर ।

—क्षेमानन्द 'राहत'

गीत

पुलकित कर उर, मुकुलित कर है,
 जननी, घोर प्रलय में ।
 वन निर्शाथ-तम ज्योतिर्मय कर,
 हे जीवन-अधिकारी ।

^१ अष्टभाष, न्धार्यपरता ^२ मृत्यु श्रौं जीवन

^३ दुग्धश्रौर सुग्ध

नारकीय यमिना नर नानर,
 सतत तेजयन्तधारी ।
 जगतीयन में सनुक्षण,
 पन-मानव का शानन,
 जीवन चिरमंशय में !
 प्लवित कर उर, मुकुलित कर है,
 जननी धोर प्रलय में !
 उषर दिशि हिमगुभ हिमानन,
 स-सत मन्वयननीररा ।
 दक्षिण शररह सिन्धु सनापिल
 धांता पदनल पापन
 नम के सगरिल तारे
 कृतं, मानव प्यारे
 तुम जिन कानाय, भय में ।
 शक्ति कर उर, मुकुलित कर, है
 जननी, धोर प्रलय में !
 तारे जिनने प्रात नगन में,
 जितनी नरर रक्षनी !

सुन न सका पर जीवन अवतक
गुग-आवाहन, जननी !
तेरा युग-रव भैरव
गूँज उठे सारा भव
जीवन जागे जय में ।

पुलकित कर उर, मुकुलित कर, हे
जननी, घोर प्रलय में !

पथिक अकेला निशि अधियारी,
पग-पग पर है दिग्भ्रम !

एक वार इस अधगुहा में,
जागे सिंह पराक्रम !

एक वार हो जय-जय !

सूस्त विश्व का सब भय
गीत उठे ध्वनि-जय में !

पुलकित कर, उर, मुकुलित कर, हे
जननी, घोर प्रलय में !

अमा रातनी जाती है,
आवंगी धवला राका !

मिस्र मिस्र मे फहरेंगी,
मोगल मी चिर पुण्य पताग ।
मग पागल मरिड
मगल मिर मार र
मोगल मी जद-जद म ।
पुतावली कर उर, म युवा ल र हे
मरिडी, मी म कये म !

—१० प्रथम भाग

झण्डा-शक्ति

झण्डा-गायन

विजयी विश्व तिरंगा प्यारों ।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा ॥
सदा शक्ति सरसाने वाला,
 प्रेम सुधा वरसाने वाला,
वीरा को हरपाने वाला,
 मातृ-भूमि का तन मन सारा ।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा ॥
स्वतन्त्रता के भीषण रण में,
 लसकर जाँश बढे क्षण-क्षण में,
कोपे शत्रु देग कर मन में,
 मिट जायें भय सकट सारा ।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा ॥

विजय-पताका

निज विजय पताका फहरे,
मुक्त वायु मडल में अपनी मानस लहरी लहरे ।
लिया रहे जगतीतल में वह सत्याग्रह का साका,
हाथों में हाथेयार न ये, हाँ यी बस यही पताका ।
रोक न सक्त जिरा बढ़ने से लोह का भी नाका,
चाकू चमत्कृत अरिल विश्वने नया तर्क सा ताका
उह करता ही म्या, बर्वरता जिसक आगे ठहरे,
निज विजय-पताका फहरे ।

दिया हमारी पुण्यभूमि ने दुर्लभ कोष हमें है,
महें न हस्तक्षेप किसी का तो क्या दोष हमें है ।
उरते हैं न डरात ह हम, लोभ न रोष हमें है,
किन्तु विश्व की शानति तभी है जब सन्तोष हमें है ।
जिगर भीतर चोर चिन्त्रिया हो वही नीति से भहरे,
निज विजय-पताका फहरें ।

भारतीय भाई-भाई हम सब विभु के बालक ह,
कर्मकार ही पूजापति हैं, रूपक भूमि-पालक ह ।

आदर्शों के अन्तर्गत हम, लीला के कालक है,
 लाकार, सवि, संचित अपने शानक अचालक है ।
 तब नया जीवन निगमन मरणा धरित हो धरें
 निज विजय-पताका फहरें ।

—सुमतीशरण गुप्त

भगडा-चन्दन

एक हमारा जना भंडा, एक हमारा देश !
 अब भगडे के नीचे निश्चित एक समिट उद्देश !
 हमारा एक समिट उद्देश ।
 शक्त जागृति के प्रभात में एक नवम्ब प्रकाश-
 रंग है अब और एक ना एक प्रबुद्ध उत्थान ।
 गेति गेति जनों के अंतर्गत एक विजा विज्ञान,
 मरुत पल में एक उठने का एक नगर निर्माण ।
 मरुत मरुत, मरुत मरुत मरुत के विद्वेय,
 एक हमारा देश मरुतः एक हमारा देश ।

कितने वीरों ने कर-करके प्राणों का बलिदान,
 मरते मरते भी गाया है इस झण्डे का गान ।
 रक्सेंगे ऊँचे उठ हम भी अक्षय इसकी आन,
 चक्केंगे इससी ज्ञाया में रस विष एक समान ।
 एक हमारी सुग्न सुविधा है, एक हमारा क्लेश,
 एक हमारा ऊँचा झण्डा एक हमारा देश ।
 मातृभूमि की मानवता का जाग्रत जय-जयकार;
 फहर उठे ऊँचे से ऊँचा यह अविरोध, उदार
 साहस अभय और पारुष का यह सजीव संचार;
 लहर उठे जन-जन के मन में सत्य अहिंसा प्यार;
 अगणित धाराओं का संगम मिलन तीर्थ-सन्देश
 एक हमारा ऊँचा झण्डा एक हमारा देश ।
 मुनेंमव-‘एक हमारा देश’ ।

—मियारामशरण गुप्त

जय राष्ट्रीय निशान !

बड़े शूरीरों की टोली
खेलें आन मरण की होली

बूढ़े और जवान ।

बूढ़े और जवान ।

जय राष्ट्रीय निशान ।

मन में दीन-दुखी की ममता,
हम में हो मरने की क्षमता,
मानव-मानव में हो समता,

धनी गरीब समान

गृजे नभ में तान

जय राष्ट्रीय निशान ।

तेरा मेरु दण्ड हो कर में,
स्वतन्त्रता के महासमर में,
वज्रशक्ति वन व्यापे उर में,

दे दें जीवन-प्राण

दे दें जीवन प्राण

जय राष्ट्रीय निशान ।

--मोहनलाल द्विवेदी

गोलियों की लगी जब झुकी थी ।

नीचे आजादी की तब पड़ी थी ।

याद हो गर वो खँसे नहाना ।

तो न झुका यह नीचे झुकाना ॥

उमने तो था न क्या जुल्म ढाया ।

पेट के बल पे हमको चलाया ।

सोसो बच्चों को पैदल भगाया ।

माँओं बहिनो को घर घर रुलाया ।

याद हो जो तुम्हें वह फिसाना ।

तो न झुका यह नीचे झुकाना ॥

आँसु भी न क्या हो रहा है ?

कौन मुझ नींद में सो रहा है ?

लागा पान न नर पेट गाना ।

मच बोलो तो है जेलगाना ।

है उर्मा में झिडा यह तराना ।

होना आजाद या मिट ही जाना ॥

म म कर लो अहद मर मिटेंगे ।

पर न उस व्रत में तिलभर हटेंगे ।

करमें लेकर इमे सूरमा—

कोटि-कोटि भारत-सन्तान ।

हँसते हँसते मातृभूमि के—

चरणों पर होंगे बलिदान ॥

हो घोषित निर्भीक विश्व में—

तरल तिरगा नवल निशान ।

वीर हृदय गिल उठें मारते---

भारतीय क्षण में मैदान ॥

हो, नम नम में व्याप्त चरित--

सरमा शिवा को नमो नमो ।

गण--पताका नमो नमो ॥

नययज्ञो, न्यातन्त्र समर में—

नव जीवन सचार करो ।

शत्रु अहिमा में दलकर--

दानना दुर्ग को क्षार करो ।

शान्त तान्त युग में हैं वीरों ।

जीवन सुमन निसार करो ।

कच बर मे एउ नाय

बेनी या नय कयार जमे ।

शाक केक सु सुशिर मे—

कच नारा नमो नमो ।

गए—पलाग नमो नमो ॥

उ न तहमानय की बोटी पर—

तरर उने उरावेने ।

दिव अवाजिनी गए पलाग—

ग गारर फलनवेने ।

अ मे उता ग. न इमने

गीरर जनी नगवेने ।

गारनरा मे गारर नगवेने—

नगवेने गारर नगवेने ।

ने नगर नगर नो. मे—

नगवेने ग नमो नमो ।

गए—पलाग नमो नमो ॥

तीन रंग का झण्डा प्यारा

तीन रंग का झण्डा प्यारा
ऊँचा उड हरदम फहराये ।

सत्य-न्याय का चिन्ह हमारा
प्रेम-सुधा सब पर बरसाये ॥

इस झण्डे को आगे लेकर
एक कौम वन कदम बढ़ावें
अपनी अपनी कुरवानी को
आजादी के लिये चढ़ावें ।
फिर से प्यारा हिन्द हमारा
मुख की लहरों से लहराये ।
हिंदू मुसलिम, बौद्ध, पारसी,
ब्राह्मण, हरिजन, सिक्ख, इसाई
हम तो एक वतन के ही हैं
आपस में सब भाई-भाई

हिल मित्र कर अष्ट काम करेंगे

प्राजादी भारत पा जाये

नाम रंग गा भगवा प्याग,

उषा उर हरदम पतराये

—भीमदारायण अष्टम ह

ध्वजाभिनन्दन

जो इसकी छाया में आवै
सर्वनाश से भी भिड जावे !
तुग हिमालय से भारत के
महामिधु तक यह फहरावें !

× × ×

सागर पर हो राज हमारा,
अम्वर पर अधिकार हमारा !
वायुयान आ, जन्तुयानों पर
उडं तिरगा भ्रूण्डा प्यारा !
नव-पभात हो, भारत भर में
हो गंसा अनुपम उजिभारा,
अन्धकार मिट जाय, मुक्ति के
गीता में गूँज नभ सारा !
भारत के कोने-कोने में,
भ्रूण्डा फहरें आज हमारा !

उठ जाये तुफान मे
कः त्रिप दिन एक ज्ञान ।

× × ×

मिथ्यापन है क्या तुम,
तु पासो मे दल-पौरुष नर दे ।
भास दे, सतीस पोटि
रुने मे श्व एकि । क दे ।
म क उठे आसरा अचानक
ति अज्ञान के शैश्व नर मे ।
किर्षी टट मोर वरुन जी
मेरी केवल एक लहर मे ।
ये शब्द है मे ज्ञान,
यह सराव है मे ज्ञान ।
इ ज्ञान है मे ज्ञान पर
कर्म, धर्म, उ, अ, प्र, म, नः ।

जय जय प्यार राष्ट्र-निशाम !

जय जय प्यारे राष्ट्र-निशान !

कोटि कोटि भारत-हृदयों का

तु ही चिर पूजित भगवान् ! जय०

चिर प्रतीक तु देशभक्ति का,

चिर स्मारक तू राष्ट्र-शक्ति का,

चिर प्रेरक तु अनामिकि का,

तु ही चिर गौरव मान ! जय०

अमर शहीदों का तू स्मारक,

शोषित जीवों का तू तारक,

गाम्य ण्य का मतत प्रचारक,

तु ही ध्येय अर तू ध्यान ! जय०

तु स्वानन्द-गीत का गायक,

तु ही नवम्भूति का दायक,

तु विदलित जीवों का नायक !

अमर कान्ति का तु आह्वान ! जय०

तेरे चरणों पर मैं शून्य शून्य
 नरनाथ, चरणों में प्रतिबन्ध नत,
 तेरी रक्षा कीने मैं तब.

तब पर शून्य तू तब प्रतिबन्ध ! तब
 'सन्तानप्रसाद' 'शक्ति'।

प्रयाण-गीत

११, १२, १३ ।

पूरी शून्य शून्य शून्य
 चले शीघ्र शून्य, शून्य शून्य
 शून्य शून्य ! शून्य शून्य ! शून्य, शून्य, शून्य ।
 शून्य शून्य शून्य शून्य !
 शून्य शून्य शून्य शून्य !
 शून्य शून्य ! शून्य शून्य ! शून्य शून्य !
 शून्य शून्य शून्य शून्य !
 शून्य शून्य शून्य शून्य !
 शून्य शून्य ! शून्य शून्य ! शून्य, शून्य, शून्य ।

राजतंत्र के इस खँडहर पर
प्रजातन्त्र के उठें नव शिखर;
जन-गण जय ! जन मत जय ! जय, जय, जय !

चटो प्रमजन-आंधी बनकर,
चढो दुर्ग पर गाँधी बनकर
वीर हृदय ! धीर हृदय ! जय, जय, जय !

बलि पर बलि ले चलो निरन्तर
हो भारत में आज युगान्तर
हे बलमय ! हे बलि मय ! जय, जय, जय !

जगें मानु-मदिर के ऊपर
स्वतन्त्रता के दीपक सुन्दर
भगलमय ! बढो अभय ! जय, जय, जय !

कोटि-कोटि नित नत कर माया
जनगण गावें गौरव-शाथा,
नम अक्षय ! अमर अजय ! जय, जय, जय !

— मोहनलाल द्विवेदी

बढ़े चलो-बढ़े चलो !

(प्रथम गीत)

न हाथ पक शक्य हो

न नाथ पक शक्य हो

न शक्य नीर, दूर हो

हटो नती ! उटो बती !

बट चली ! बट चली !

रों नमस्त हिन-नमस्त

लगाता प्रथम उठे बिग्न,

नमो ही जाय जन बिग्न,

हटो नती ! बगो नती !

बटो चली ! बटो चली !

बटो नती बटो हो

बटो ने बटो-बटो हो

बटो बटो बटो हो

जिये चलो ! :

बटे चलो ! .

गगन उगलता

छिडा मरण व

लहू का अप

अडो वही ! .

बटे चलो !

चलो नयी मिसाल हा,

जलो नयी मशाल हां,

बटो नया कमाल हो,

रुकां नही ! . भुको नही !

बटे चलो ! बटे चलो !

—मोहनलाल द्विवेदी

—

प्रयाण-गीत

अह चलो, अह चलो
भीरु गिं, चलो !
अराजा अरु अमर
पाना अरु अरु चलो !

अह अहो अहो मे
अह अहो अहो मे
अह अहो अहो मे
अह अहो अहो मे !

अह अह अहो हो
अह अह अहो हो
अह अह अहो हो
अह अह अहो हो
अह अह अहो हो
अह अह अहो हो
अह अह अहो हो
अह अह अहो हो

आग में तुम जलो
 स्वर्ण से तुम गलो
 प्रेम में तुम पलो
 रूप में तुम ढलो

बढ चलो बढ चलो
 धीर बीरो, चलो !
 करतलों पर अमर
 प्राण धर-धर चलो

हाथ में वजू है
 पाश को तोड दो
 भाग्य यह कुञ्च नहीं
 धर चरण मोड दो
 ये चपक झोड दो
 मधुफलश फोड दो
 यज्ञ में एरु बलि
 नी कडी जोड दो

गल-दल को दलो
 नल कपट को झलो

पर कभी तुम जगत् का
बहारा न लो

बट चलो, इत चलो
धोर सीन, चलो !
कस्तलो पर यमर
प्राग् धर-धर चलो

साभनं जति की
हे मरुग ना रहा
त नगर गीत हा
बह नी ना ना रहा
नार प बरना रही
गार्ग मरना रही
बलना ना नर
प्राग् भर-ना रही

बढ चलो, बढ चलो
 धीर वीरो, चलो !
 करतलो पर अमर
 प्राण धर धर चलो ।

मत भुकां द्रोह से
 मत भुकां मोह से
 मत लुकां लोह से
 आन से मत टलो

—पुधीन्द्र

रण-निमन्त्रण

आओ आओ ! वीरो आओ !
 मातृभूमि की जय-जय गाओ !
 स्यतन्त्रता की वेदी पर
 बलिजाये हम सब मिलकर

स्यतन्त्रता है प्राण हमारा,
 जीवन का हम एक सहारा,

कर्म उल्लेख कर रहे ।
देहान्तर जैसा न न ना ?

हिन्दू मुस्लिम, निरग्न-पारसी,
गले मिले नये भारतवासी ।
प्राण जाय पर धूँवु नहीं
भगते आपस न न करी

धर्मों नभा यह पहने गारी,
धर्म-यज्ञ की बरदी गारी ।
चरमा—धारी धर्मो निष्ठा ३
बनती उन मोहन का ध्यान ।

बनती बने स.व शांति । नभर न,
या । अ-धर्म परीक्षा न भू न ।
मातृ, मि यो न य. रहे—
या न्योत्पादक प्राण करे

जय जय जग चिच्छक्ति भवानि,
 जय जय जय स्वातन्त्र्य प्रदानि
 अथ हम में संचार करो,
 सत्य धर्म की निजय करो

—वैजनाथ महादय

एकता-गीत

मेरी जाँ न रहे मेरी जाँ न रहे
 सामों न रहे न व साज रहे ।
 फात हिन्दू मेरा आजाद रहे
 मेरी माता ऊँ सर पर ताज रहे ।
 अंग, हिन्दू. मुगलमों एक रहे
 भाई भाई सा रम्म-रिवाज रहे !
 गुरु गुरु, कुरान-गुरान रहे
 मेरी पूजा रहे श्री नभाज रहे !
 मेरी जाँ न रहे !

मेरी टर्ती मर्दिया मे नज रहे
 मोरै मेर न डगन्दाज रहे !
 मेरी दीन कुवार मिले हो मर्दी
 एक मर्दी मभूर जावाज रहे !
 ये जिलान मेर गुराहाल रहे
 पुरी हो फलान मुगन्ताज रहे !
 मेरे बन्दे बान पे गिलार रहे
 मेरी यो बहिनो की लाज रहे !
 मेरी जी न रहे !...
 मेरी नाये रह, मेरे बेल रहे
 पर पर मे मंग मर नाज रहे !
 भौन्दर जे नायो बहती रहे
 हरम जागन्द बरगाज रहे !
 भावे की हो साह मदा ॥ मरम
 मेरे मर मर मे दाज रहे !
 मरम मे मर हो मर मे मर
 मेरे मर मर मर मर रहे !

मेरी जाँ न रहे मेरा सर न रहे ।

सामाँ न रहे न ये साज रहे ।

—माधव शुक्ल

गैर

कोई नहीं है गैर !

बाबा ! कोई नहीं है गैर !
हिन्दू, मुसलिम, सिख, ईसाई,
देख, सभी हैं भाई-भाई
भारतमाता सब की माई,
मत रख मन में बैर

बाबा ! कोई नहीं है गैर !
भारत के सब रहने वाले,
कैसे गोरे कैसे काले ?
हिन्दू मुसलिम भगडे पाले,
पडगये जिमसे, जान के लाले,
क्या है यह बैर ?

दादा ! कोई नहीं है गैर !
 राम रामक रहमान रामक ले,
 धर्म रामक ईमान रामक ले,
 मस्जिद कैसी मंदिर कैना,
 ईश्वर का अस्थान रामकले,
 कर दोनो की सर
 दादा ! कोई नहीं है गैर !
 सोचेना किम पन मे दादा ?
 पयो बेटा है धन मे दादा ?
 गारु मर्ती यशो तन मे दादा !
 दृ द ले उमयो मन मे दादा !

नांग नहीं की गैर.

दादा ! कोई नहीं है गैर !

कोई नहीं है गैर.

दादा ! कोई नहीं है गैर !

हिन्दू-मुसलमान

रे, क्या हिन्दू ! क्या मुसलमान !
इन दो देहों में एक जान !!

दोनों इस धरती पर बसते दोनों के ऊपर आसमान

रे क्या हिन्दू, क्या मुसलमान !

दोनों ही मिट्टी के पुतले

दोनों ही में है हाड माँस

दोनों ही खाते अन्न एक

लेंते ह दोनों एक साँस

दोनों मिट्टी में मिलते हैं

फिर कब हों कि वह हो मसान !

रे क्या हिन्दू, क्या मुसलमान !

मजमून वही, है वही बात

कुरआन पढो, या पढो वेद

फिर क्यों ग़रेजी—रक्तपात

गमभङ्गा हमने यह नहीं भेद

वयो वर्षी गन्धे मित्तने दोनो

गीता पुराणा, सन्तभा-पुराण :

ने वया हिन्द, वया समस्तमान ।

एन ईष्ट पुराणो मे ही एव

एव गये तुम्हाणः गुणगम !

अथ धर्म ह्येव भजतव्यं दोना

कृत्ये एते ते सुरत-गान !

ये राम र्शम अगच्छे वयो,

हे भक्ता तुम्हाणः वया वयान ?

ने वया हिन्द, वया समस्तमान ।

एव एव अर्था मन्त्रिद र्श

मिन्नात देवा एते सामानान

गान्धे ने र्शम-अर्थे वया

रे क्या हिन्दू, क्या मुसलमान !
उन दो देहों में एक जान !

—सुधी द्र

मन्दिर मेरा, मसजिद तेरी !

मन्दिर मेरा, मसजिद तेरी ।
मेरे कहने में मेरी हठ,

तेरे कहने में जिद तेरी
टकराते हम ये जाते गिर
मुगलिम, तेरी सुन्दर मसजिद

हिन्दू तेरा मनहर मन्दिर ।
अब कह, मेरी या तेरी थी

यह मिट्टी पत्थर की ढंगी ॥
मन्दिर मेरी, मसजिद तेरी ।

बस एक बार ही डोले ये,
गिरते गिरते, ढहते टहते

स्वर में स्वर भरकर चाले ये—

“एक बनो”

दोनों एक समान, भाई, दोनों एक समान ।
मुसलमान-हिन्दू तुम पीछे, पहिले हो इन्सान ।

एक तुम्हारा रूप रंग है,

एक चाल है एक ढंग है,

एक तरह के जिस्म तुम्हारे, एक तुम्हारी जान ।

भाई, दोनों एक समान ।

धर्म एक सा, ध्यान एक सा,

कर्म और ईमान एक सा,

मदिर ममजिद सभी बराबर गीता और कुरान ।

भाई, दोनों एक समान ।

मिट्टी का ही मदिर सुन्दर,

मिट्टी ही की ममजिद मनहर,

मिट्टी एक, फर्क नामों का, एक राम रहमान ।

भाई, दोनों एक समान

छप रहा है !

गेय, प्रेरणा-प्रद राष्ट्रीय कविताओं

का

अभिनव संग्रह—

-:प्रभात फेरी:-

नवयुग-साहित्य-सदन

खज़री बाजार

इन्दौर
